Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

अनंत गोपाल शेवड़े का हिंदी में औपन्यासिक योगदान

शेख अजमद शेख आहेमद

हिंदी साहित्य में हिंदी प्रदेशों के रचनाकारों के साथ-साथ अनेको अहिंदी प्रदेशों के लेखकों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है । शेवडे महाराष्ट्र के नागपुर से है । वे एक मराठी भाषिक होते हुए तथा अंग्रेजी में उच्च शिक्षित रहते हुए भी उन्होंने साहित्य सृजन के लिये हिंदी भाषा को ही अपनाया था । इसके पीछे उनका हिंदी भाषा के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित होता है । वे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक के रूप में जाने जाते है । १९११ ई . में जन्मे अनंत गोपाल शेवडे स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजो की वक्र दृष्टि तथा विनोबा भावे का प्रभाव प्रमुख रूप से है । वे सच्चे अर्थो मे गांधीवादी थे । अनंत गौपाल शेवड़े का हिंदी साहित्य में पदार्पण १४ वर्ष की आयु में ही हुआ था । उनका सर्वप्रथम लेख इलाहबाद के 'बालराखा' मासिक पत्र में सन् १९२५ में छपा था । तब से लेकर वे लगभग ४५ वर्षो तक हिंदी साहित्य में अथक तथा निष्ठापूर्वक लेखन करते रहे । किशोरावस्था में ही उन्होने पिता के प्रोत्साहन पर अनेको कहा । कहानियाँ , लेख आदि लिखे जो विश्वामित्र, सुधा , मापुरी , विशाल भारत आदि पत्र पत्रिकाओ में छपते रहे ।कहानी से हिंदी- साहित्य पदार्पण करणेवाले शेवडे का आगे चलकर उपन्यासकारूप ही अधिक मुखर हुआ है । उनके दो कहानी संग्रह दो निबंधसंग्रह तथा ग्यारह उपण्यारो प्रकाशित है । वे लेखक के साथ एक श्रेष्ठ पत्रकार भी रहे है । उन्होंने सन् १९३३ मे अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र 'इंडिपेडेट' की स्थापना की थी । जिसे जीवित रखने के लिए उन्हें अंग्रेजी शासन की वक्र दृष्टि को बार - बार सामना करना पड़ा था । यही पत्र आगे चलकर १९७८ में 'नागपुर टाईम्स' में रूपांतरित हुआ था । उन्हें जब भी जेल भेजा जाता वे तब –तब अपना करावासिय समय साहित्य समप्रित किया करते ।

शेवडे जी का रुझान कहानी की अपेक्षा उपन्यास की और ही अधिक था। वे स्वय इस बात को स्वीकार करते हुए कहते है की " मुझे इतनी बात कहने के लिए उपन्यास ही अच्छा साधन है । कहानी का दायरा बड़ा सीमित होना है। " (राष्ट्रवानी - मार्च १ ९६१पृ.सं ३९) उपन्यास वास्तव में समुचे जीवन की एक झाकी है, जिसमें जीवन या किसी समस्या आदि का विस्तार पूर्वक चित्रण किया जाता है । शेवडे के उपन्यासों का एक विहंगम परिचय निम्नवत् है ।

ईसाईबाला (१९३० ई .)

शेवड़े जी ने किशोरावस्था में ही इस उपन्यास को लिखा था । इस उपन्यास को लोकप्रियता इतनी मिली कि उस समय वह ' स्वप्नसिध्दि ' के नाम से गुजराती भाषा में भी छपा था । इसमें लेखक ने अंतरप्रांतीय विवाह का समर्थन किया था । यह एक ऐसी कृति है जो भारतीय नवयुवकों को राष्ट्रीय बल तथा बलिदान की प्रेरणा देती है। यह केवल एक प्रेम कहानी न होकर, इसमें जातीयता के विरुध्द तीव्र आवाज़ उठाया गया है । राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में ईसाईबाला और प्रकाश का चरित्र अत्यंत निखरा हुआ है ।

मृगजल (१९४९ ई.)

इसमें गांधीवादी दृष्टिकोण से ' हृदय परिवर्तन ' पात्रों की आंतरिक तथा बाह्य द्वंद्व फ्रायड कला जीवन के लिए का प्रतिपादन किया गया है । यह नागपुर के एक प्रतिष्ठित चित्रकार की कथा है । अशोक एक ऐसा साधक है जिसकी शहर की सबसे धनवान विधवा मायादेवी से एक चित्र–प्रदर्शनी भेट होती है । मायादेवी अपने रूप माया से अशोक को परास्त करना चाहती है पर अशोक उससे दूर भागता है ; –" जिसका प्रतिशोध मायादेवी उससे लेती है । पर अंत में वह अपने जीवन से पहली बार घृणा उत्पन्न हुई अशोक के सामने हार गई। और पश्चाताप करती कहने लगी–मैं कमजोर हूँ , मुझे माफ कीजिए। और अशोक के सामने अपना मस्तक झुकाकर अशोक को भाई कहते हुए आँसू बहाने लगी। " (मृगजल– पृ . २१६) इसप्रकार एक भोगवादी प्रेमी नारी बहन के रूप में परिवर्तित हो गयी,यह गांधीवादी विचारों की ही विजय है ।

अशोक का मरियम की ओर आकर्षित होना मायादेवी सहन नहीं कर सकी । वह अशोक को पारिवारिक जीवन में कमजोर बनाती है । तथा उसे अपने घर एकांत में बुलाकर चुनौती है । " और नजदीक बैठकर बोली – तो बोलिये, आप तैयार है ।" (मृगजल पृ.सं २९६) पर इसे अशोक ठुकराता है । इसके साथ ही प्रस्तुत उपन्यास में फ्रायड के सिद्धांतों पर अनेक स्वप्नों को भी बताया गया है । मरियम का अपने बच्चे की मृत्यु का स्वप्न, क्योंकि जिंदा आदमी मरा हुआ दिखाई देना उसके भविष्य के दीर्घायु का सूचक है । इस प्रकार मायादेवी के मन की बदले की भावना जो आखिरी दम तक रहती है इसका भी सुंदर मनोवैज्ञानिक चित्रण मृगजल में हुआ है । अर्थात यह उपन्यास सामाजिक मनोवैज्ञानिक तथा गांधीवादी विचारों की त्रिवेणी पर आधारित है ।

पूर्णिमा (१९ ५० ई .)

इस उपन्यास में मानव की द्वन्दात्मक प्रकृति का बड़ा सुंदर और मार्मिक विश्लेषण हुआ है । इसमें 'पूर्णिमा' के मन में उठ रहे परस्पर दो विरोधी विचार प्रवाहों से वह ' स्व ' तथा भोग विलास या जीवन की उदास मूल्यों पर आधारित दिव्य प्रेम इसमें से वह निर्णय नहीं कर पाती । आखिर वह भोग की ओर आगे बढ़ती है । पर शेवड़े जी कहते हैं कि , " मोहवश गलती के लिए नारी क्षमा के लिए पात्र है । " (पूर्णिमा पृ . १४०) और यही कारण है कि उपन्यास में आगे वह लिखते हैं – " पुरुषार्थ गलती करने वाले का तिरस्कार करने में नहीं परंतु उसके प्रति सहानुभूति रखकर , उसे ऊपर उठाने में मदद करने में है । " (पूर्णिमा पृ .१३९)

पूर्णिमा का दो मनोवृत्तिवाले युवकों से संबध आता है । वह अपने अहं के सामने भोग की और झुकती है, जिससे उसका संपूर्ण जीवन नष्ट होता है । लेखक कहते है – " क्षण के मोहवश फॅसी नारी को फेक देना, उसका संपूर्ण जीवन नष्ट करना मानवता नहीं है । " (पूर्णिमा पृ. १४५) इस प्रकार उपन्यास के अंत में सज्जन विनयकुमार पूर्णिमा के बच्चे को अपना नाम देता है । जिससे पश्चाताप दग्ध नारी का लेखक ने मन परिवर्तन करवाकर उसे सच्चे रास्ते पर लाया तथा उसे व्यभिचार एवं भ्रूण हत्या के पाप से भी बचाया शेवड़े जी ने कलात्मक ढंग से आधुनिक मनोवैज्ञानिक सत्य पर पूर्णिमा के चरित्र का चित्रण किया है । इसप्रकार उपन्यास में ' पूर्णिमा ' की वेदना में ही समस्त नारी की पीड़ा समाहित हुई है । आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है

निशा–गीत (१९५० ई.)

इस उपन्यास का प्रारंभ और अंत महाराष्ट्र के दो प्रमुख स्थानों मुंबई तथा ग्राम श्रीपुर देहात से संबंधित है । इसमें तीन प्रमुख पात्र है - डॉ. मधुसूदन, नर्स सुशीला तथा प्रधानाध्यापिका पदमा। इसका कथानक प्रेम के आदर्श पर आधारित है जो मधुर वेदनापूर्ण है । प्रणय तथा प्रेम की श्रेष्ठता को लेकर विकसित हुई कथा में एक शिक्षित युवक तथा प्रीड़ा विधवा के द्वारा अनमेल पर आदर्श युगल को चित्रित किया गया है ।

डॉ. मधुसूदन की माँ बचपन में ही इलाज के अभाव में पर चुकी है । वह पिता से कहता है- " बापू ! में दाक्तल बनूँगा, बहुत भारी दाक्तल | " (निशा- गीत, पृ. १४) अपनी दमित दच्छाशक्ति पर वह डॉक्टर बनता है । डाक्टर बनने पर नर्स सुशीला की और यह आकर्षित होता है जो ' लिबिडो ' का द्योतक है क्योंकि नर्स उससे आठ वर्ष बड़ी थी । दोनों के प्यार को लेखक ने उदात्त स्वरूप दिया है । " सुशीला प्रेयसी और माता बनने की अदम्य सुधा को दबोच रही थी, उसके मन में एक अतृप्त प्यास सदा दुबकी हुई बैठी थी, वह चाहती थी ऐसा स्थान मिले जहां अपना स्नेह और वात्सल्य दे सके । वह कुछ लेना नहीं चाहती, माँगती नहीं थी, केवल देना ही देना चाहती थी । " (निशा गीत, पृ. ६८) इसमें प्रणय और प्रेम की श्रेष्ठता को लेकर विकसित कथा शिक्षित युवक तथा एक प्रौद्धा विधवा के द्वारा अनमैल पर आदर्श प्रणयी युगल को प्रस्तुत करती है ।

ज्वालामुखी (१९५६ ई .)

यह राष्ट्रीय वातावरण तथा राजनैतिक प्रधानता से ओतप्रोत शेवड़े का प्रमुख उपन्यास है । इसकी सृजनशीलता के संदर्भ में वे कहते हैं कि , " सीवनी जेल के तंग आहाते में विनोबाजी से लगातार और लंबी चर्चाओं के दौरान ही इस उपन्यास की कल्पना साकार हुई । " (ज्यालामुखी , पृ . दो शब्द) इस उपन्यास में सन्

१९४२ के आंदोलन के हिंसक–अहिंसक दोनों तत्वों का सक्रिय बातावरण का सजीव चित्रण किया गया है । इस उपन्यास की कथा का मूलस्त्रोत नागपुर के शहीर शंकर तथा सिंध के छोटी उम्र के विद्यार्थी हेमू कलानी जिन्हें फांसी की सजा हुई थी, यह है।

इसमें अभयकुमार नामक ऐसे युवक की कथा चित्रित है जो प्रेम रोग से दूर र व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से विमुख होकर , अंग्रेजों से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए शहीद होता है । जब शवयात्रा के जुलुस को दबाने अंग्रेजों ने गोलियाँ चलाई उसमें विजया घायल होकर शहीद बनती है । लेखक लिखते है– " एक था अब दो हो गये । दोनों की एक चिता रचाई गयी पति – पत्नी– अभय और विजया कितना अन्योन्य दर्शन । स्त्रियाँ बोली , बड़ी पुण्यवती है, विजया रानी सचमुच सती सावित्री का अवतार है । हमारे बड़े भाग्य जो उसके दर्शन हो गये । " (जालामुखी, पृ.१८१) नारी महिमा का सुंदर चित्रण उपन्यास की अपनी अलग विशेषता है । उपन्यास में गांधीवादी राजनीती का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है जो उनके दर्शन में पूरी आस्था को प्रकट करता है । लेखक नायक के साथ–एकाकार हुआ सा प्रतीत होते हैं । इस प्रकार गांधी आदर्श पर आधारित क्रांति उन्माद का चित्रण करनेवाला यह उपन्यास ज्वालामुखी शब्द को सार्थक करता है ।

मंगला (१९ ५८ ई.)

शेवड़े जी का यह उपन्यास सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परंपरा में आता है । इसमें रवींद्रनाथ के 'घर और बाहर' बैसी समस्या वर्णित है साथ ही इसमें अनमेल विवाह की समस्या को भी दर्शया गया है । इसमें एक अंधे सदानंद का विवाह 'मंगला' समान सुंदरी युवती से होता है और यहीं से उसका जीवन 'अमंगल' हो जाता है भविष्यकार ने मंगला के बारे में उसके पिता से कहा था कि, " यदि हटे –कट्टे स्वस्थ पुरुष के साथ विवाह हुआ तो साल भर मे ही वह पति को खा डालेगी और स्वयं विधवा हो जायेगी

मंगला गांधारी समान बंधन में नहीं बंधती डॉ. मानधने कहते है कि, " मंगला उपन्यास जैनेद्र जी का प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'सुनीता' के समान कुछ अंशों में समानता रखता है । " (हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. १५९) अंत में पछताकर घर वापस आयी मंगला को सदानंद स्वीकार करता है । इस प्रकार शेवड़े ने इस उपन्यास में एक और नारी को प्रगतिशील दृष्टिकोण से दिखाया है तो दूसरी ओर सतीत्व और पत्नीत्व के भारतीय आदर्श को भी अंत में स्थापित किया है । उपन्यास में सदानंद का चित्रण लेखक ने बड़ी सहृदय के साथ चित्रित किया है। अत कृपथा –साढ़ीयो के प्रति विद्रोहो तथा गांधीवादी हृदय परिवर्तन के विचारों की स्थापना उपन्यास में प्रमुख रुप से उभरकर सामने आया है ।

अधूरा सपना (१९५९ ई .)

इस उपन्यास में व्यक्तिगत प्रेम, राष्ट्रप्रेम, मनोवैज्ञानिकता तथा हिंदू आदर्श का समन्वय है । यह एक संघर्षमय, दर्द भरी आदर्श त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है । इसमें पुरुष के सामने नारी के 'अंह' की हार को आदर्श रूप में चित्रित किया गया है । वैभवशाली सुहासिनी बुद्धिवान गिरीश के अहं को चुनौती देने के लिए रामलाल की ओर बढ़ती है । जैसे–जैसे गिरीश उसकी ओर आकर्षित होने लगा वह उसे उतना ही पीड़ित करती रही। रामलाल से विवाह उसे पश्चाताप हो रहा था पर उसे वह व्यक्त नही करती।वैसे ही गिरीश भी आख़िर तक इसी अंह को लेकर उसकी तृप्ति के लिए सुहासिनी का पीछा करता रहा । इस प्रकार लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में दार्शनिक मनोवैज्ञानिक पुट देकर कलात्मकता का परिचय दिया है । उन्होंने दमित इच्छा की तृप्ति शारीरिक उपभोग में न बताकर आदर्श के साँचे में ढाला है । जहाँ फ्रायड़ केवल शरीर देखता है वहाँ भारतीय दर्शन आत्मा पर विश्वास करता जिसे लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में उभारा है ।

भग्नमंदिर १९६० ई .)

यह स्वातंत्र्योत्तर भारत की पृष्ठभूमि पर लिखा ऐसा राजनीतिक उपन्यास हैं, जिसमें ज्वालामुखी का नायक आज के राष्ट्रीय चरित्र के रास को देखकर खिन्नता से पुनर्जन्म सा लेता है । इसमें धनंजय नामक पत्रकार की कथा वर्णित है जो राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध कर गांधीवादी विचारों से सत्य अहिंसा को अपना मूलमंत्र मानता है । " जब उसने देखा जोशीजी का राज्य भ्रष्टाचार का केंद्र बनता जा रहा है । उसमें अपने ओर

पराये का भेद चल रहा है । ग्रुपबाजी और दलबंदी चल रही है । ठेके, खदाने, एजेंसिया कोई ऐसा धन्धा नहीं जिसमें उनके रिश्तेदारों का साझा न हो । " (भग्नमंदिर, पृ.१६३) इस प्रकार धनंजय यह देख - देखकर अस्वस्थ होता है, जिसकी परिणति संघर्ष तथा उसे नष्ट करने के प्रयासों में होती है । इस उपन्यास में सत्ता ओर त्याग, संपादक और अधिकारी, पुलिस तथा न्याय आदि संघर्ष रोवक है । इन सब के बीच पीसती जनता का चित्रण किया गया है । सीधी- सादी जीवन शैली तथा उच्च विचार एक सच्चे गांधीवादी व्यक्ति की विशेषता है कि जो संपादक द्वय धनंजय और उसकी आदर्श पत्नी गीता के रूप में उपन्यास की अन्यतम् विशेषता है ।

इस प्रकार समूचे उपन्यास में कांग्रेसी मंत्रिमंडल तथा उसकी आंतरिक दलबंदियों पर करारा व्यंग है । इसकी सबसे बड़ी खूबी सादगी तथा यथार्थ की पकड़ जो चरित्रों पर वास्तविकता के रूप में चित्रित हुई है । यशपाल के ' झूठा – सच ' समान इसमें शेवड़े ने स्वतंत्र भारत की राजनीतिक स्थिती का चित्रण कर उज्वल भविष्य की ओर संकेत किया है ।

इंद्रधनुष्य : (१९६६ ई.)

यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है जो स्वप्न सिद्धांत पर आधारित है । इस दृष्टि से अज्ञेय के पश्चात डॉ. देवराज, नरेश मेहता बादि के सम्य अनंत गोपाल शेवड़े का भी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में महत्वपूर्ण योगदान है । पत्नी की शारीरिक और मानसिक इच्छाएँ पूर्ण करना तथा पुष होकर पति का कर्तव्य और पति को उसे सहकार्य देना उसका कर्तव्य है । इन्हीं कारणों के आसपास समूचा उपन्यास घुमता है ।

प्रो. ज्ञानशंकर बंबई के एक कालेज के प्रसिद्ध दर्शन के प्रोफेसर है । वे एक दिन आत्महत्या करने वाले दलीप को बचाकर अपने पर होते है । दलीप ने एक धनवान कन्या से अवैध संबंध रखे थे इसलिए उसे मारकर निकाल दिया था । प्रो. ज्ञानशंकर का अपनी ही एक शिष्या वीणा विवाह हुआ था । अभी तक उसे मातृत्व सुख न मिला था । डॉक्टरी जॉच पर पता चला था कि वह मातृत्व धारण कर सकती है । जब प्रोफेसर दो ने चुनाव कार्यवश भद्रपुर गये थे तब वीणा दलीप से संतुष्ट होती है । " रिक्तता चली जाती है, जीवन का घर भर जाता है । " (इंद्रधनुष्य ,११४०) पर प्रोफेसर को इस बात का पता चलते ही वह पतिशोध में वीणा की हत्या करना चाहते हैं पर लेखक की मानवीयता ऐसा नहीं होने देती । है कि, " पत्नी पति से पिता का सौम्य दलार प्रियतम का प्रणय, पुत्र के प्रति सात्विक वात्सल्य और सखा की स्थिर मैत्री चाहती है ।... संस्कारी पत्नी या स्त्री कभी वाम मार्ग पर जाना नही चाहती है ।...जो चीज उसे पति से नही मिलती वह अन्यत्र ढूंढती है । इसमें इसमें स्त्री का दोष नहीं पति का है । यदि पुरुष उसकी पूर्ति करने में मन लगायेगा तो वह नारी पुरुष की जन्म - जन्म की दासी बन कर रहेगी, " (इंद्रधनुष्य, पृ. १८६) डाक्टरी दमपत्ती के समझाने पर का ज्ञान शंकर अपनी भूल स्वीकार ता है । दलीप भोगवादी वृत्ति का व्यक्ति है जिसमें सामाजिक गुणों की कभी है तो दूसरी ओर वीणा में मातृत्व की तथा ज्ञानेश्वर में अनुभव की। इसमें बनाया गया है कि, परिस्थितिविश कोई पाप करता है तो उसे उत्तरदाई नहीं मानना चाहिए।" (इंद्रधनुष्य पू. १५९) प्रस्तुत उपन्यास में इसी आदर्श की स्थापना शेवड़े जी ने मनोवैज्ञानिकता के साथ प्रतिपादित की है ।

कागज (१९७५ ई .)

इस उपन्यास में एक साहित्यकार का जीवन आत्मकथात्मक शैली में चित्रित किया गया है । लेखक जब तक विविध जीवनानुभवों से नहीं गुजरता तब तक उसकी दृष्टी विशाल नहीं बनती । प्रस्तुत उपन्यास में भी निरंजन विविध चोलें बदलता है । वह प्रेमी , पति , दामाद , पिता के विविध बंधनों में बंधकर भी उससे मुक्त रहता है । क्योंकि लेखक कहते है " रंग - बिरंगे लेबल लगे कागज पर तस्वीर ठीक नहीं उतरती है । उसके लिए कोरा कागज ही चाहिए । " (कोरा कागज , पृ . ४) समूचे उपन्यास में निरंजन सबके साथ रहकर भी रिक्त ही रह जाता है । उपन्यास का आरंभ ही निरंजन के प्रेम– भंग से होता है । इस पर अपनी प्रथम कहानी लिखता है । जिसके अंत में वह लिखता है- " क्या हुआ , क्या हुआ पूछती है संगदिल – औरत मेरे करम– ही फूंटे है । " (कोरा कागज, पृ. २८) इसके बाद उसके जीवन में विविध नारिया आती है । मुंबई आने पर वहां भी उसे अच्छे - बुरे, गरीब –अमीर, वेश्याएँ , ठग , सुंदर नारियाँ, बदमाश, घमंडी लेखक मिलते हैं । रंगमंच की पत्रिका की

सम्पादिका मंजुश्री देवी निरंजन को अपनाना चाहती थी पर वह उससे दूर भागता है । आखिर में वह हिमालय के निसर्गरम्य बातावरण में पहुँचता है । वहाँ भी उसे लेखन के लिए समय नहीं मिलता ।

अमृतकुंभ (१ ९ ७८ ई .)

यह शेवड़े जी का प्रसिद्ध उपन्यास है जो उनके अंतिम दिनों से कुछ ही पूर्व प्रकाशित हुआ था । भौतिक उन्नती के हिंसाचार से पास्त , तडपती हुई आत्माओं को भारतीय प्राचीन कविमुनियों का अमृत संदेश ही शांति दे सकता है । लेखकर ने गांधी , विनोबा , विवेकानंद आदि के चारों को इसमें दर्शाया है । इसमें सत्यकाम की कथा ही मुख्य है । जिसके साथ बसीधर , राधा , धनपति अशोक और सरिता तथा ब्रम्हानंद स्वामी आदि कथाएँ सहायक रूप में चित्रित है । पालीन जो अमेरिका के हृदयहीन महानगर की रहनेवाली एक सेल्सवूमन है । जो वहाँ के एककीपन रूपी अभिशाप के कारण भारत आती है और " सत्यकाम , समाज से अभिशाप पत्नीत्व के पहले मातृत्व की अवैध संतान । " (अमृतकुंभ , पृ . २१) है । जो जीवन के संघर्ष में सुख - दुःख के काल से गुजरते हुए वैभव तथा ज्ञान प्राप्त कर अनाथ म का संदेश लेकर जीवन की अपूर्णता को पूर्ण करने के लिए भटक रहा था । सत्यकाम ओर पालीन हरिपुरा ग्राम में मिलते हैं । वहाँ रहने के बाद वे स्थायी शांती हेतू हिमालय की ओर प्रस्थान करते है । इस प्रकार पालीन भारत–देश का कोना - कोना पहचानकर हरिपुर में सत्यकाम से मिलती है । सत्यकाम भी पाश्चात्य देशों की भौतिक संस्कृति को निकट से में जाया था । अतः दोनों प्रकृति और पुरुष , न्यूयॉर्क और भारत पश्चिम और पूर्व मिलकर विश्व बंधुत्व तथा विश्वशांति का संदेश देते है ।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय संस्कृति को जानने के लिए प्रथम पश्चिम को पहचानने का स्वर प्रमुख है । इस उपन्यास में एक और मानवधर्म की स्थापना है तो दूसरी ओर मानव मन में स्थित जीवन शक्ति चेतना तथा अमृतत्वों का आवाहन है जो जीवन में स्थायी शांति देगा इसकी खोज उपन्यास की प्रमुख विशेषता है । इसमें भारतीय अध्यात्म शक्ति को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है ।

इस प्रकार संक्षेप में अनंत गोपाल शेवड़े एक ऐसे अहिंदी भाषी उपन्यासकार है , जिनके साहित्य में गाँधीवादी विचार धारा का रहा है , पर उनका चिंतन क्षेत्र विविध सामाजिक समस्याओं को मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में विचरता है , जिसमें अंत में आदर्श की स्थापना होती आदर्श के साथ यथार्थ का समन्वय उनके उपन्यासों की विशेषता है । ये कला जीवन के लिए माननेवाले एक ऐसे रचनाकार है जो सत्यम शिवम सुंदरम के उपासक है । उनके उपन्यासों में स्त्री– विमर्श का स्वर भी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में अभिव्यक्त हुआ है । एक हिंदी भाषी हिंदी रचनाकार की यह साधना निर्विवाद प्रशंसनीय है । एक मानवतावादी रचनाकार के रूप में वे हिंदी के आदर्श उपन्यासकार है ।